आर्थिक विकास में महिलाओं की सहभागिता

न्यू इंडिया समाचार रिसर्च टीम

भारत की विकास यात्रा आज वैश्विक स्तर पर एक केस स्टडी बन चुकी है, जिसे इसकी दृढ़ता, नवाचार और महिलाओं के संकल्प के लिए सराहा जाता है। 'फ्राम बॉरोअर्स टू बिल्डर्स' नामक अध्ययन के अनुसार, 2019 से 2024 के बीच ऋण मांगने वाली महिलाओं की संख्या तीन गुना हो गई है, जो उनकी बढ़ती वित्तीय भागीदारी और आत्मनिर्भरता का संकेत है। यह परिवर्तन केवल सशक्तीकरण तक सीमित नहीं है; इसने भारत की आर्थिक दृढ़ता को एक नई परिभाषा दी है, जहां महिलाएं देश की विकास यात्रा को सक्रिय रूप से दिशा दे रही हैं।

पिछले एक दशक में, भारत ने केवल एक वित्तीय प्रणाली नहीं बनाई, बल्कि एक ऐसा आंदोलन शुरू किया जिसमें महिलाएं फल-फूल रही हैं, परिवार समृद्ध हो रहे हैं और अर्थव्यवस्था नई ऊंचाइयों को छू रही है। समावेशन ने आर्थिक विकास को गति दी है, जिसमें महिलाएं प्रमुख शक्ति के रूप में उभरी हैं। **भारत की विकास गाथा आज वैश्विक स्तर पर एक केस स्टडी बन चुकी है, जिसे इसकी दृढ़ता, नवाचार और महिलाओं के संकल्प के लिए सराहा जाता है।**

एक स्पष्ट प्रवृत्ति के रूप में देखा गया है कि **वे परिवार, जिनका नेतृत्व आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएं कर रही हैं, अधिक स्थिर और सक्षम सिद्ध हो रहे हैं, जिससे राष्ट्र का भविष्य और अधिक सुरक्षित हो रहा है।** प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) ने महिलाओं को अपने वित्तीय मामलों को समझदारी से प्रबंधित करने का अधिकार दिया है, वहीं स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) ने महिलाओं का ध्यान शिक्षा, स्वास्थ्य और सामुदायिक विकास में निवेश की ओर केंद्रित किया है। ऋण और शिक्षा तक लोकतांत्रिक पहुंच के साथ, महिलाएं अब अपनी आकांक्षाओं को उपलब्धियों में बदल रही हैं।

सिर्फ वर्तमान नेतृत्व में ही ऐसा दृष्टिकोण धरातल पर उतरा है, जिसमें **महिलाओं के वित्तीय सशक्तीकरण और समावेशन को केवल एक नारे से निकालकर हकीकत में बदला गया है। अब महिलाएं केवल सहायता प्राप्त करने वाली नहीं, बल्कि वित्तीय नेतृत्व संभालने वाली बन चुकी हैं।**

लक्षित पहलों के माध्यम से, महिलाओं ने न केवल अधिक वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त की है, बल्कि उनके लिए उद्यमिता के नए अवसर खुले हैं और ऋण की उपलब्धता भी बेहतर हुई है – जिससे भारत की आर्थिक प्रगति और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

यह 2014 से पहले के उस दौर से एक बड़ा बदलाव है, **जब महिलाओं के सशक्तीकरण की योजनाएं केवल काग़ज़ों में दबी रहती थीं और नौकरशाही की निष्क्रियता तथा प्रणालीगत उपेक्षा का शिकार होती थीं।**

भारत की विकास गाथा में महिलाओं की भूमिका

महिलाओं के वित्तीय भविष्य को मज़बूत बनाते हुए क्रेडिट कार्ड में सुधार

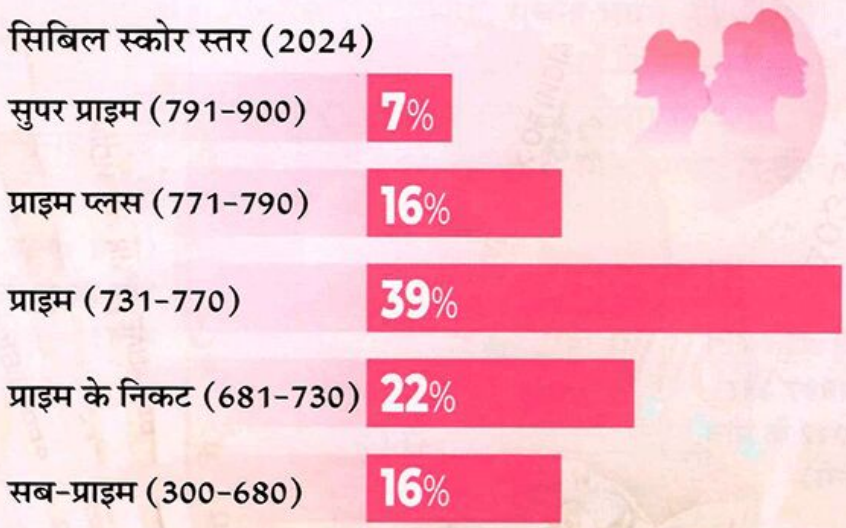

स्रोतः डब्ल्यूईपी (नीति आयोग), ट्रांसयूनियन सिबिल, माइक्रोसेव कंसल्टिंग संयुक्त रिपोर्ट

भारत की विकास गाथा में महिलाओं की भूमिका

वित्तीय भविष्य को नया आकार देती भारतीय महिलाएं

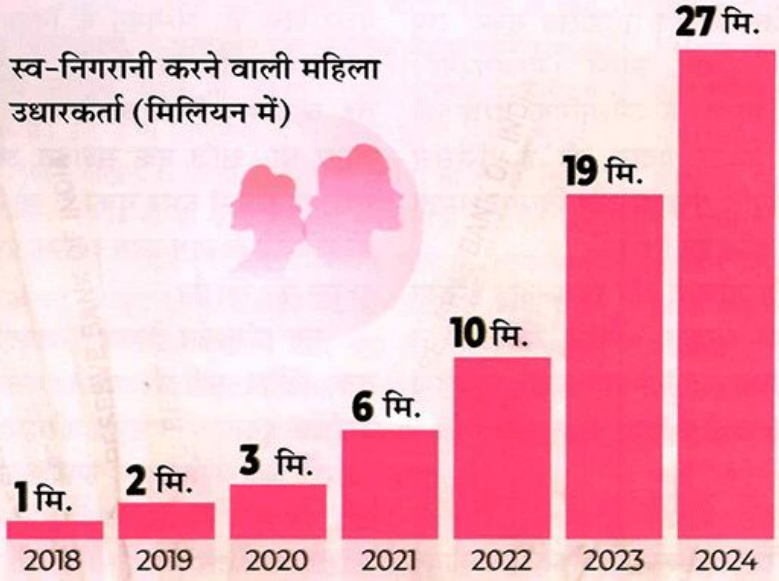

स्रोतः डब्ल्यूईपी (नीति आयोग), ट्रांसयूनियन सिबिल माइक्रोसेव कंसल्टिंग संयुक्त रिपोर्ट

मुख्य निष्कर्ष

नीति आयोग और क्रेडिट सूचना कंपनी ट्रांसयूनियन सिबिल द्वारा **मार्च 2024 में जारी संयुक्त अध्ययन 'फ्रॉम बॉरोअर्स टू बिल्डर्सः वुमेन्स रोल इन इंडिया' फाइनेंशियल ग्रोथ स्टोरी' के अनुसारः**

- **ऋण मांग में उछालः 2019 से 2024 के बीच ऋण की मांग** करने वाली महिलाओं की संख्या **तीन गुना** हो गई है, जो महिलाओं की बढ़ती वित्तीय भागीदारी और आत्मनिर्भरता का संकेत है।
- **ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्र में वर्चस्वः दो-तिहाई महिला उधारकर्ता ग़ैर-मेट्रो क्षेत्रों से हैं,** जो शहरी केंद्रों से परे गहराते वित्तीय समावेशन को दर्शाता है।
- **क्रेडिट जागरुकता में वृद्धिः** ग़ैर-मेट्रो क्षेत्रों की महिलाएं, मेट्रो शहरों की तुलना में, **अपने क्रेडिट को ट्रैक**

भारत की विकास गाथा में महिलाओं की भूमिका

महिलाओं का क्रेडिट जागरुकता की ओर बढ़ते कदम

आयु के हिसाब से आत्मनिर्भर महिलाओं का वर्गीकरण (2024)

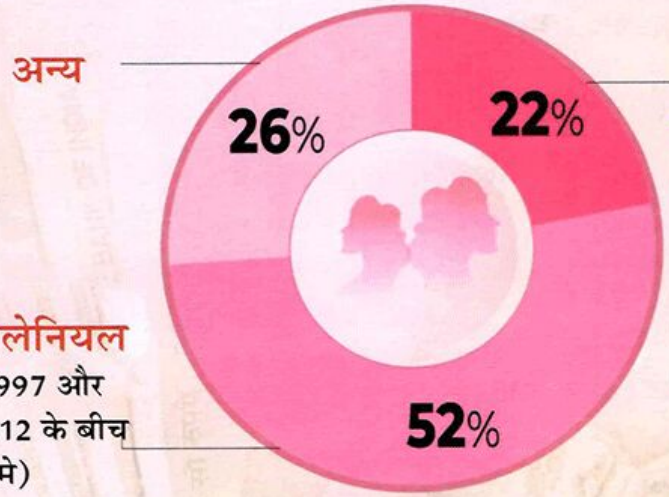

स्रोतः डब्ल्यूईपी (नीति आयोग) ट्रांसयूनियन सिबिल माइक्रोसेव कंसल्टिंग संयुक्त रिपोर्ट

करने में अधिक सक्रिय हैं।

- **स्व-निगरानी में वृद्धिः** ग़ैर-मेट्रो क्षेत्रों में 48% की वृद्धि बनाम मेट्रो क्षेत्रों में 30% की वृद्धि यह दर्शाती है कि **छोटे शहरों में महिलाओं में वित्तीय साक्षरता और ज़िम्मेदारी में सकारात्मक बदलाव आ रहा है।**
- लगभग 62% स्व-निगरानी करने वाली महिलाएं 'प्राइम' और उससे ऊपर के बैंड में आती हैं, जो यह संकेत देता है कि वे लगातार अच्छे क्रेडिट अभ्यासों का पालन करते हुए अपने क्रेडिट का सक्रिय रूप से प्रबंधन कर रही हैं। इससे महिला उधारकर्ता क्रेडिट के दृष्टिकोण से स्वस्थ बनी हुई हैं।
- **क्षेत्रीय क्रेडिट व्यवहारः** दक्षिणी राज्यों में 1.2 करोड़ स्व-निगरानी करने वाली महिलाएं हैं, जिससे यह क्षेत्र सबसे आगे है, जबकि राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में सक्रिय महिला उधारकर्ताओं की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई है।
- स्व-निगरानी करने वाली महिलाओं की जनसंख्या में **जेनरेशन ज़ी महिलाओं की हिस्सेदारी 2024 में बढ़कर 27.14% हो गई, जो पिछले वर्ष 24.87% थी।**
- महिलाओं द्वारा संचालित सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) ने **भारत के औद्योगिक ढांचे को विविधता प्रदान की है, जिससे आपूर्ति श्रृंखला और निर्यात क्षमता में वृद्धि हुई है।**
- **मुद्रा योजना** और **स्टैंड-अप इंडिया** जैसी सरकार समर्थित योजनाओं ने महिला उद्यमियों को अपने व्यवसायों को बढ़ाने में मदद की है।

द्वितीय और तृतीय स्तर के लाभ

- **परिवार कल्याण में वृद्धिः** जीवन स्तर में सुधार और अगली पीढ़ी के लिए बेहतर संभावनाओं के कारण पारिवारिक कल्याण में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- **आर्थिक दृढ़ताः** विविध भागीदारी एक अधिक मज़बूत और स्थायी आर्थिक ढांचे को जन्म देती है, जो वित्तीय झटकों और मंदी का सामना करने में सक्षम होता है।
- **उद्यमिता में वृद्धिः** विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार, रोज़गार सृजन और विविधता को प्रोत्साहन मिलता है।
- **नीति विकासः** वित्तीय क्षेत्रों में महिलाओं की सफलता नीति-निर्माताओं को और अधिक समावेशी नीतियों के निर्माण की प्रेरणा देती है, जिससे वंचित वर्गों के लिए भी अवसरों का विस्तार होता है।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकताः** जो राष्ट्र अपनी महिला जनसंख्या की पूरी क्षमता का उपयोग करता है, वह वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है, निवेश को आकर्षित करता है और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह युग **महिला-केंद्रित नीतियों के अभूतपूर्व प्रभाव को दर्शाता है,** जिन्होंने महिलाओं को आर्थिक प्रगति की प्रमुख शक्ति में बदल दिया है। अध्ययन के निष्कर्ष एक उल्लेखनीय परिवर्तन की पुष्टि करते हैं – **वह कार्यबल जिसे कभी कम आंका जाता था, आज एक सशक्त आर्थिक स्तंभ के रूप में उभर चुका है,** जो विकास को गति देने के साथ-साथ व्यापक प्रभाव भी उत्पन्न कर रहा है।

यह परिवर्तन केवल सशक्तीकरण तक सीमित नहीं है; इसने **भारत की आर्थिक दृढ़ता** को एक नई परिभाषा दी है। महिलाएं अब केवल ऋण उपयोगकर्ता नहीं रहीं, बल्कि वे **वित्तीय रूप से जागरूक, क्रेडिट भागीदार** बन चुकी हैं, जो सक्रिय रूप से राष्ट्र की विकास यात्रा को दिशा दे रही हैं। ❑